Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VII July 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

राकेशजी की कहानियों में प्रेम विघटन

डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा
दयानंद वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

१.प्रेम : व्याख्या -

स्त्री और पुरुष के शारीरिक एवं भावनात्मक आकर्षण के फलस्वरुप प्रेम रुपी मनोभाव की उत्पति होती है। प्रेम शारीरिक लगाव के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। स्त्री पुरुष के बीच गहरी आसक्ति को प्रेम कहा जाता है। साथ-साथ परस्पर सहानुभूति और वफादारी भी महत्वपूर्ण है। प्रेम के सम्बन्ध में मानवीय दृष्टिकोण में भिन्नता है। सेक्स प्रेम का अंग है पर वही शक पैदा करता है। कई बार तो थोडे से शक के कारण भाई बहनों के सम्बन्ध में दरारें पड जाती है।

प्रेम जीवन की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बातों में से एक हैं । प्रेम शब्द का प्रयोग उचित ढंग से किया जाय तो उसका संकेत स्त्री-पुरुषों के किसी एक या प्रत्येक सम्बन्ध की ओर नहीं होता, बल्कि उससे ऐसा सम्बन्ध उपलक्षित होता है जिसमें भावना प्रचुर मात्रा में सन्निहित रहती है । प्रेम का एक शत्रू है जो धर्म से भी बढ़कर है, वह है काम । प्रेम के लिय कर्म को त्यागना मूर्खता है । किन्तु अर्थाजन की होड़ में प्रेम की भावना को भूलना भी गलत है । प्रेम मैथून की इच्छा से कही अधिक है । यह उस अकेलेपन से बचने का मुख्य उपाय है, जिससे अधिकतर नारी-पुरुष अपने जीवन के अधिकाँश भाग में पीड़ित रहते है । सभ्य लोग बिना प्रेम के अपनी सेक्त वृत्ति को पूर्ण तथा सन्तुष्ट नहीं कर सकते । समुचित परिस्थितियों में अधिकतर नारी-पुरुष अपने जीवन में कभी-न-कभी उत्कृष्ट प्रेम का अनुभव करते है । परन्तु अनुभवहीन व्यक्तियों के लिए कोरे आकर्षण और उत्कृष्ट प्रेम के बीच भेद करना बड़ा कठिन है ।

प्रेम के बिना मैथुन का कोई मूल्य नहीं है । इस बात को अधिकाँश विवाहित नारी-पुरुष भूल जाते है । विवाह आनन्द का एक अनन्त स्वप्न है । नारी-पुरुष एक दूसरे को प्रेम करते हों और उस प्रेम में उत्कंटता, कल्पना और कोमलता हो, तो उसका अमूल्य महत्तव है । इसको न जानने के कारण सुखमय विवाहितों की संख्या बहुत कम है । "विवाह दो व्यक्तियों के साहचर्य-सुख से कहीं अधिक गम्भीर है । यह एक ऐसी प्रथ है जो समाज के ताने-बाने का संश्लिष्ट सूत्र है, क्योंकि इसी के परिणामस्वरुप सन्तान उत्पन्न होती है, और इसका महत्त्व पति-पत्नी की व्यक्तिगत भावनाओं से अधिक है ।"

सातवें दशकोत्तर हिन्दी कहानियों मे प्रेम कहानियाँ अपेक्षाकृत कम हैं । इसका कारण यह है कि जिस भारतीय परिवार का लेखन चित्रण कर रहे हैं उसमें विवाह-पूर्व प्रेम-सम्बन्ध स्वीकृत नहीं है । माता-पिता प्रेमियों की भावनाओं को समझने में असमर्थ है । अधिकाँश युवक तयशुदा विवाह ही स्वीकार करते हैं । जहाँ पति-पत्नी लगभग एक दूसरे के बहुत कम परिचित होते है। लेखक का दृष्टिकोण प्रेमियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण है किन्तु विवाह-संस्था के प्रति विद्रोह करने में उसकी

दिलचस्पी नहीं है । माता-पिता दहेज के मारे परेशान हैं किन्तु फिर भी प्रेम-विवाह में सहयोग नहीं देते । प्रेम-विवाह के टूटने के बाद पारिवारिक सहानुभूति की अप्राप्ति का खतरा है । अतः अधिकाँश लेखकों ने प्रेमियों से ध्यान हटाकर विवाहित युगल में उत्पन्न प्रेम सम्बन्धों प अधिक ध्यान दिया है । कामकाजी नारी को अपनी नौकरी बनाये रखने के हेतु प्रेम सम्बन्ध निर्माण करने पड़ते है । तरक्की फिर स्वयं की हो या पति की, बॉस के साथ प्यार का नाटक करना पड़ता है । गर्भनिरोधकों के प्रचार से विवाहित पुरुष आसानी से अविवाहित स्त्रियों को अपनी हवस का शिकार बना रहे है । वे घर में फिक्स डिपाजिट रखेंगे और बाहर सेविंग्स । इन नये-नये सम्बन्धों पर जिन्होंने पारिवारिक सम्बन्धों में तूफान खड़ा कर दिया है, हमने इन्हीं बातों का इस अध्याय में विचार करने का प्रयास किया है ।

विवाहित पति-अविवाहित प्रेमिका सम्बन्ध

कामकाजी नारी अपने रुप सौन्दर्य और वार्तालाप-ढंग के आधार पर आफिस में ही पहले अपना प्रेमी और फिर पति ढूँढ़ रही है । अपनी पत्नी ने ऊबा पति आफिस की स्मार्ट स्टेनों से मन बहलाव के लिए प्रेम का नाटक कर रहा है । कामकाजी नारी जानती है कि उसका प्रेमी विवाहित है किन्तु फिर भी वह अपनी ओर से बढ़ावा दे रही है । विवाहित प्रेमी अनुभवी होने से छोटी-छोटी बातों से घबराता नहीं । समाज भी कुँवारों की अपेक्षा उस पर अधिक भरोसा कर सकता है। बहुपत्नीत्त्व वाले संस्कार पुरुष में होने से वह इस कार्य में रस ले रहा है । भारतीय नारी विवाह के पूर्व जिस ढंग से स्मार्ट रहती है वैसे विवाह के बाद नहीं । यही कारण है कि पति और गैर औरतों से सम्बन्ध बढ़ाता है। शहर से बाहर विवाहित पुरुष के साथ उसकी पत्नी बनकर अविवाहित नारियाँ जीवन का आनन्द लुटने के हेतु जा रही हैं । विवाह के बाद क्या होगा इस पर उन्होंने कभी नहीं सोचा है । वह बाद की बात है । अभी जो सुख मिल रहा है, उसे क्यों छोड़ा जाय । पत्नी जब पुरुषों के यह नये सम्बन्ध जानती है तब पारिवारिक सम्बन्धों में दरारें पड़ने लगती हैं । क्लेश बढ़ने लगता है । मनमुटाव होता हैं ।

विवाहित पति-विवाहित प्रेमिका

स्वतन्त्रता तथा शिक्षा ने नारी को ऐसी सुविधा प्रदान की है कि वह खुलकर पुरुषों से मिल सकती है । प्रेम या प्रेम का नाटक कर सकती है । कामकाजी नारी पर समाज के बन्धन भी ढीले हैं । विवाहित प्रेमी-प्रेमिकाओं के मिलन स्थल अब होटल के शानदार कमरे हो गये है । पुरुष का यह सोचना की पति के होते हुए भी प्रेमिका उसे चाहेगी गलत है और प्रेमिका का यह सोचना कि पत्नी से तलाक लेकर वह उससे शादी करेगा असम्भव है । फिर भी बेजोड़ जोड़े मन चाहे साथी के लिए प्रयत्नशील है ।

विवाहित पत्नी - अविवाहित प्रेमी

फिगर बिगड़ जाने के डर से आधुनिकाएँ अपने पति को पुट्ठे पर हाथ तक धरने नहीं देतीं । किन्तु पति के दूकान चले जाने पर प्रेमी से मिलना चाहती हैं । इस भावना के पीछे शायद यही राज है कि प्रेमी से मिलते समय संवेदनाएँ जागृत होती हैं । पति के साथ नहीं । फिर पति अधिकार

जताकर, बिना चिरौरी किये उसका सब कुछ नोंच कचोटता है । स्त्री की प्रतिभा अब शरतन्द्रीय रही नहीं ।

पत्नी पति से कबूतराना प्यार चाहती है । भरी बन्दूक की तरह आये और खली कर चले गये यह वह नहीं चाहती । किन्तु जब उसके मन को पति नहीं समझता तब वह अपने पुराने प्रेमी की याद करती है । प्रेमी की याद से पति के समागत करते समय वह कोल्ड बनी रहती है । वैसे ही कभी पति की याद से प्रेमी को मिलते समय काठ बन जाती है ।

विवाहित पत्नी - विवाहित प्रेमी

पतिव्रता शब्द का अर्थ अब वह नहीं रहा जो मनु के युग में था । पति यदि महीनों घर न आता तो पत्नी क्या करे ? उसे अपने मनबहलाव के साथ वासना की पूर्ति करने के लिए कोई चाहिए । विवाहित पुरुषों में डर नहीं होता । समाज उन पर शक नहीं करता । चौबीसों घण्टे मशीन के साथ माथा फोड़ने वाले पति के पास पत्नी की मनवार करने के लिए समय कहाँ हैं ? सन्तान की प्राप्ति यदि न हो पति स्वयं को नपुंसक समझने लगताहै और अपनी आँखों के सामने अपनी पत्नी को पराये पुरुष के साथ खुलकर बातें करने का अवसर देता हैं । बन्द कमरे में पत्नी और उसका विवाहित प्रेमी हो और कमरे बाहर उसका पति हो तो उस पर क्या गुजरेगी कि कल्पना कथाकारों ने बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत की हैं ।

प्रेम :आदमी और दीवार -

आदमी और दीवार के भाई-बहन के बीच में हरीश के एक पत्र के कारण गलत फैहमी पैदा हो गयी। हरीश ने सत्ती को लिखे कई पत्रों के बाद एक पत्र उसकी बहन राजो को भी लिखा था। पत्र में ऐसी-वैसी बात नहीं थी अन्त में और के बाद तीन बिन्दु थे। उन बिन्दुओ ने सन्देह को वास्तविक सूत्र देकर सत्ती के मन में गंभीर भाव भर दिए। कारण हरीश उसके घर पर ठहरा था। उन दिनों उस आदमी **ने उसकी अनुपस्थिती का कोई अनुचित लाभ तो नहीं उठाया?"** [१] राजो के पास बूढे माँ-बाप के अतिरिक्त कोई था नहीं। राजो ने वह चिट्ठियाँ संभालकर क्यों रखी? हरिश को सत्ती अच्छी तरह से जानता था। उसके विचार बडे खूले थे। सत्ती ने जब सरोज के प्रति अपने एक तरफा प्यार का इजहार किया था। तब कोई लाभ नहीं हुआ था। हरिश ने उस बात पर उसका मजाक उडाया था। उसने उपदेश दिया था - **" जो एक लडकी को अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकता, वह जिन्दगी में और क्या करेंगा...? और प्यारे! आदमी की जिन्दगी में एक नही कई-कई लडकियाँ आती है। एक बार चूक हो गई सो हो गई, मगर आगे कभी ऐसी चूक न हो...!"** हरिश जब ऐसा उपदेश देता है तो सत्ती जानता है, उसका चरित्र क्या होगा? सत्ती का अपनी बीस साल की जवान बहन पर शक करना वाजिब है।

अपने बहन पर तीन बिन्दुओं के कारण शक करनेवाला सत्ती स्वयं बगल की छत पर टहलनेवाली सरोज से एकतरफा प्यार करता था। किसी-न-किसी समय छत पर एक चेहरा दिखायी देता था। कभी वह छत पर बाल सूखाती थी। उसे देखकर हट जाती थी। **" सरोज के सामने से हट जाने पर भी उसका खुले बालों वाला चेहरा उसकी आंखों के सामने बना रहता था। वह घंटो रात**

को बिस्तर पर पडा सरोज के बारे में ही सोचता रहता था। उसे कितनी इच्छा होती थी कि कभी वह सरोज को पास से देख सके, उसके साथ हंसकर बात कर सके।" वह चाहता था कि, राजो उससे दोस्ती करें और वह अपने घर आये। उस बहाने वह उससे बात कर सके पर राजो ने न उससे दोस्ती की न सरोज उसके घर आयी। एक दिन उसकी शादी हो गयी। वह मैके आ जाएगी तो बाल सूखाने छत पर आयेगी तब वह उसे देखगा। ऐसा हुआ ही नहीं। यही बात जब उसने हरीश से बतायी तब हरीश ने उसे फटकारा था। उसने कहा था कि जो आदमी एक लडकी को आकर्षित नहीं कर सकता वह और लडकिंयों को क्या आकर्षित करेगा। उसी बात के कारण सत्ती के मन में शक निर्माण हुआ। आदमी स्वयं प्यार कर सकता है पर वह कदापि नहीं चाहेगा कि उसकी बहन यह हरकत करें। दूसरों की बहनों से प्यार करने का हक उसे है, उसकी बहन को नहीं। जरा-सी बात के लिए वह हरीश जैसे लेखक की चिट्ठियाँ जला देता है और राजो को पीट देता है।

२. प्रेम का विकास -

प्रेम का विकास लडकियों मे देखा देखी होती है। **'सीमाएं '** कहानी की नायिका उमा जानती है कि उसमें प्रेम का विकास होगा नहीं। कारण उसे लगता था वह देखने में सुन्दर नहीं है। वह जब भी शीशे के सामने खडी होती तो उसके मन में झुंझलाहट भर जाती। उसका मन होता की, **"उसकी नाक लम्बी हो, गाल जरा हल्के हों, बॉडी आगे की ओर निकली हो। और आँखे थोडा और बडी हो।"** परन्तु अब यह संभव नहीं। अतः वह स्वयं को आईने में देखती नहीं। उसके मन में प्यार के प्रति उत्सुकता इसलिए होती है कि रक्षा ने बताया था कि सरला का किसी लडके से प्यार हो गया। वह चिट्ठियाँ में कविता लिखकर भेजता है। जलती दोपहर में कालेज के गेट के पास खडा होता है। उमा को भी लगता है उसे भी ऐसा ही प्रेमी मिले। **" प्रेम... यह शब्द उसे गुदगुदा देता था। राधा और कृष्ण के प्रेम की चर्चा तो रोज ही हुआ करती थी। परन्तु उस दिव्य और अलौकिक प्रेम के बखान से वह विभोर नहीं होती थी। परन्तु यह प्रेम... उसकी सहेली का किसी लडके से प्रेम... यह ओर चीज थी। इस प्रेम की चर्चा होने पर मलमल के जामे सा हल्का आवरण स्नायुओं को छू लेता था।"** अपने एक सहेली की शादी में वह जाना चाह रही थी तब अपने पहनावे के बारे में देखिए वह कितनी उदास है। **"उसे अपने शरीर पर साडी और सूट दोनों में से कोई चीज अच्छी नहीं लगती थी। कीमती से कीमती कपडे उसके अंगो को छूकर जैसे मुरझा जाते थे।"** कुरुप औरत कभी-कभी किस हद तक सोचती है। सूट की फिटिंग अच्छी होने पर भी उसके अंगो के भद्देपन को व्यक्त करता था। लिपस्टिक लगाती है फिर पोंछ डालती है। जैसे-जैसे तैयार होकर वह शादी में भाग लेने चले जाती है। वहां पर एक लडका रक्षा से इतनी खुलकर बात करता है कि वह उनकी बातों से उत्तेजित हो जाती है। सरला का बहाना बनाकर वे दोनों वहां से रफ्फूचक्कर हो जाते है।

उसकी सहेली सरला दुल्हन के वेश में कुछ अलग ही लग रही थी। उसे ईर्ष्या तो बहुत हुई पर वह कुछ कर न सकी। वह मन्दिर चली जाती है। अचानक उसकी ऑखे किसी से टकराकर लौट जाती है। भीड में एक नवयुवक उसकी ओर देख रहा था। उसका प्रभाव देखिए उस पर क्या हुआ? **"उमा के शरीर में लहू का दबाव बढ गया। हृद्य की गति बहुत तेज हो गई। उसकी**

आंखे केले के खम्भों पर से हटकर सजी हुई सामग्री पर से फिसलती हुई फिर वही टकराई।" वह लडका अभी उसकी ओर देख रहा था। सहसा भीड में किसी का हाथ उससे छुआ। वही लडका था। भीड में उसे सिर्फ एक ज्ञान था कि एक हाथ उसे छू रहा है। यहाँ बाजू के पास, कंधे के पास। केवल स्पर्श से उसका लहू तेजी के साथ नाडियों में सरसरा रहा था, वह अब कुछ ठंडा पडने लगा। उसके शरीर में सिहरन भर गई। उसके कंधे के पास उस हाथ का स्पर्श जैसे अभी तक सजीव था। ऐसा सुख उसे आज तक नही मिला था। लेखक ने प्रेम में डूबी कन्या को, उसे विकसित होनेवाले प्रेम को एक झटका दिया है। वह चूमनेवाला लडका चोर था जो उसकी गले की चैन उडाले गया।

पूर्णिमा की बात उसकी समझ में नहीं आई। वह इतने निश्चित स्वर में कह रही थी कि पल-भर के लिए उसे स्वयं ही अपनी बात पर संदेह हो गया। फिर यह सोचा कि शायद पूर्णिमा यह समझती हो कि वह श्यामा के साथ .....। दोराहा कहानी का नायक शामा के प्रति प्रेम की भावना विकसित करना चाहता है परन्तू आधूनिक या मुक्त भोगी शामा केशरी से पल्ला झाड लेती है। तब केशरी श्यामा की बुराई करनेवाली पूर्णिमा से प्रेम संबंध स्थापित करना चाहता है। परन्तू पूर्णिमा के मन की शकी वृत्ती केशरी को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है।

३. रोमांटिक प्रेम और विघटन -

आधुनिक युग में एक ही नजर में प्रेम की रुमानी भावना का प्रसार समाज में हो रहा है। रोमांटिक प्रेम की धारणा भावना प्रधान होती है और उसमें यौन आवेग प्रमुख होते है। प्रथम मिलन में ही दोनो युग-युग के स्वप्नों को साकार करने की कल्पना करने लगते है। आर्थिक स्थितियों पर उन्हें सोचने का अवसर ही नहीं मिलता। रोमांटिक प्रेम कच्चे मन का प्यार होता है। उसमें साहस की कमी होती है। यह एक ऐसा सबल सम्मोहन होता है जिसमें सेक्स की भावना अधिक रहती है। कई बार ऐसा प्यार एकतरफा होता है। 'पांचवे माले का फ्लैट' का नायक छः सात साल पहले, लगातार बीस-बाईस दिन दो लडकियाँ से मिलता रहा। **" वे दो बहनें थी, हालाकि शक्ल-सूरत से कजिन भी नहीं लगती थी। बडी के चेहरे की हाड्डियाँ चौकोर थी, छोटी के चेहरे कि सलीबनुमा। रंग दोनों का गोरा था, मगर छोटी ज्यादा गोरी लगती थी। आंखें दोनों की बडी-बडी थीं मगर छोटी ज्यादा बडी जान पडती थी। बातूनी दोनों ही थी पर छोटी का बातूनीपन अखरता नहीं था। छोटी का नाम था प्रमिला, उर्फ पम्मी। जिन दिनों उनसे परिचय हुआ, बडी की शादी होकर तलाक हो चुका था।"** बम्बई में बरसों बाद उनकी मुलाकात अविनाश से हुई थी। वे अपने भाई सतीश को जहाज पर चढाने आयी थी। यह वही भाई था जिसके साथ अविनाश पत्ते खेलता था। पम्मी को पहचानने में उसे दिक्कत हुई। कारण **" गालों में इतनी गोलाईयां आई थी कि हड्डियों का कुछ पता ही नहीं था। सिर्फ ठोडी का गड्ढा उसे याद था। बाहें वजन में पहले से दुगनी नही तो ड्योडी जरुर हो गई थी। हर लिहाज से वह बडी बहन लग रही थी।"** दोनों बहनों ने उसे एक साथ पूछा कि क्या वह अब तक बम्बई में ही है। क्या वह अभी भी उसे पांचवे माले के फ्लैट में है?

पांचवे माले के फ्लैट ने अविनाश के जीवन में पम्मी आते-आते रह गयी। बरसों पहले जब वे दोनों फ्लैट पर आयी थी तब सीढियों की बदबू के मारे वे परेशान हो गयी थी। उसे घर में सारा सामान बिखरा पडा था। एक चीज ठिकाने पर नही थी। गुसलखाना तो इतना गन्दा था कि

सरला ने आकर ऐलान कर दिया था कि अन्दर जानेवालों से टिकट वसूल करना चाहिए। उस दिन का इम्प्रेशन अच्छा न था। बरसों बाद भी अविनाश की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं थी। एक तो वह कुछ ज्यादा कमाता न था। दूसरे वह पत्ते में ढेर सारे पैसे हार जाता था। वैसे देखा जाये तो रोमांटिक प्रेम भावना में प्रेमी-प्रेमिकाएँ जीवन के यथार्थ को ओझल कर रूमानी प्रेम में भावूक हो उठते है।

प्रमिला भावुक हो उठी थी जब अविनाश उसका वह किताब पढने ले जाता है जिसमें उसकी फोटो थी। शुरु शुरु के दिनों में प्रमिला उसकी ऑखों मे देखकर मुस्करा दिया करती थी। उसे उम्मीद थी कि अविनाश बम्बई में अपना नाम कमायेगा। परन्तु बरासों बाद भी अविनाश जहां के तहाँ ही था। ऐसे आदमी से प्यार करके उसे क्या मिलेगा? कोरा प्यार टिकता नही इस कहानी में नायक भले ही प्यार करता हो नायिका करती नहीं। कारण वह जानती है अविनाश की आर्थिक दशा बडी खराब है। इस कहानी में रोमांटिक प्यार अर्थव्यवस्था के कारण विघटित हो गया।

वह बात तो सतीश से कर रही थीा, और बार-बार देख उनकी और रही थी । उसकी अधेड शोखी में भी एक तरह का रस था । वह एक-दो बार ऐसा अनुभव करके रह गया जैसे कोई फीता लेकर उसे इंचों के हिसाब से नाप रहा है । लक्ष्यहीन की सरोज केसरी को देखकर प्रभावित हो जाती है । उसका बर्ताव कुछ आधुनिका की भाँति दिखाई दे रहा है कारण उसे सतिष से बात करने में कोई रुची नही है वह तो केसरी को देख रही है । केसरी जैसे नवयुवकों के प्रति आकर्षकता पारिवारिक विघटन का कारण बन सकती है ।

"ठीक हो जाऊंगी या जो भी हो जाऊंगी, पर यहां पर तो आराम हो ही जाएगा सब लोगों को ।" एक ठहरा चाकू कहानी का नायक बाशी रोमँटिक प्रेम में बहकर मुन्नी के लिए अपने आप में बदलाव लाता है । सबेरे लंबे समय तक सोने का आदी रहनेवाला बाशी मुन्नी के लिए सुबह छह बने उठकर तैयार हो जाता है । परनतू मुन्नही उसे अपने झांसे में फसाकर केवल उसके साथ खिलवाड करती है । इस प्रकार का प्रेम विघटन का कारण बन जाता है ।

संदर्भ ग्रंथसुची

मोहन राकेश - मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - आदमी और दीवर.
मोहन राकेश - मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - सीमाएँ..
मोहन राकेश - मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - पांचवे माले का फ्लैट.
मोहन राकेश - मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - गुनाह बेलज्जत..
मोहन राकेश - मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - उसकी रोटी.